



11075CH01

प्रथमः पाठः

## कुशलप्रशासनम्

प्रस्तुत अंश वाल्मीकिरामायण के अयोध्याकाण्ड के सौवें सर्ग से संकलित है। भगवान् श्रीराम चित्रकूट में वनवास कर रहे हैं। भ्रातृविरह से पीड़ित भरत श्रीराम से मिलने आए हैं। श्रीराम भरत से मिलने के बाद उनसे कुशल-प्रश्न करते हैं। इस प्रकरण में भरत राम से राज्यव्यवस्था संचालन संबंधी ऐसे अनेक प्रश्न करते हैं जिनसे राजनीति विज्ञान पर महत्वपूर्ण प्रकाश पड़ता है।

श्रीराम ने भरत से प्रश्न किया है कि क्या उन्होंने मन्त्रियों की नियुक्ति शास्त्रोक्त अपेक्षाओं के अनुरूप की है? क्या वे मन्त्रणा शास्त्रविधि से करते हैं? क्या उनका वेतन भुगतान समय से किया जाता है? यह पाठ्यांश प्रशासनिक व्यवस्था की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। इन्हीं बिंदुओं पर प्रस्तुत पाठ्यांश में विशद विवेचन किया गया है।

जटिलं चीरवसनं प्राञ्जलिं पतितं भुवि।  
ददर्श रामो दुर्दर्शं युगान्ते भास्करं यथा॥1॥

कथञ्चिदभिविज्ञाय विवर्णवदनं कृशम्।  
भ्रातरं भरतं रामः परिजग्राह पाणिना॥2॥

आघ्राय रामस्तं मूर्ध्नि परिष्वज्य च राघवम्।  
अङ्गे भरतमारोप्य पर्यपृच्छत सादरम्॥3॥

कच्चिदात्मसमाः शूराः श्रुतवन्तो जितेन्द्रियाः।  
कुलीनाश्चेङ्गितज्ञाश्च कृतास्ते तात मन्त्रिणः॥4॥

मन्त्रो विजयमूलं हि राज्ञां भवति राघव!।  
सुसंवृतो मन्त्रिधुरैरमात्यैः शास्त्रकोविदैः॥5॥

कच्चित्रिद्रावशं नैषि कच्चित्कालेऽवबुध्यसे।  
 कच्चिच्चापररात्रेषु चिन्तयस्वर्थनैपुणम्॥6॥  
 कच्चिन्मन्त्रयसे नैकः कच्चिन्न बहुभिः सह।  
 कच्चित्ते मन्त्रितो मन्त्रो राष्ट्रं न परिधावति॥7॥  
 कच्चिदर्थं विनिश्चित्य लघुमूलं महोदयम्।  
 क्षिप्रमारभसे कर्म न दीर्घयसि राघव॥8॥  
 कच्चित्सहस्रान्मूर्खाणामेकमिच्छसि पण्डितम्।  
 पण्डितो ह्यर्थकृच्छ्रेषु कुर्यान्निःश्रेयसं महत्॥9॥  
 एकोऽप्यमात्यो मेधावी शूरो दक्षो विचक्षणः।  
 राजानं राजपुत्रं वा प्रापयेन्महतीं श्रियम्॥10॥  
 कच्चिन्मुख्या महत्स्वेव मध्यमेषु च मध्यमाः।  
 जघन्याश्च जघन्येषु भृत्यास्ते तात योजिताः॥11॥  
 अमात्यानुपधातीतान्पितृपैतामहाञ्छुचीन्।  
 श्रेष्ठाञ्छ्रेष्ठेषु कच्चित्त्वं नियोजयसि कर्मसु॥12॥  
 कच्चिद्दृष्टश्च शूरश्च धृतिमान्मतिमाञ्छुचिः।  
 कुलीनश्चानुरक्तश्च दक्षः सेनापतिः कृतः॥13॥  
 कच्चिद्बलस्य भक्तं च वेतनं च यथोचितम्।  
 सम्प्राप्तकालं दातव्यं ददासि न विलम्बसे॥14॥  
 कालातिक्रमणाच्चैव भक्तवेतनयोर्भृताः।  
 भर्तुरप्यतिकुप्यन्ति सोऽनर्थः सुमहान्मृतः॥15॥

### शब्दार्थाः टिप्पण्यश्च

|             |                                                              |
|-------------|--------------------------------------------------------------|
| जटिलम्      | - जटाः सन्ति यस्य सः तम्, जटा + इलच्, जटा धारण किये हुए।     |
| चीरवसनम्    | - चीरं वसनं यस्य सः तम्, पेड़ के छाल के बने वस्त्र पहने हुए। |
| प्राञ्जलिम् | - नमस्कार करने वाले।                                         |
| ददर्श       | - दृश् + लिट् लकार, प्र० पु० ए० व०, देखा।                    |

|                |   |                                                                                          |
|----------------|---|------------------------------------------------------------------------------------------|
| दुर्दर्शम्     | - | द्रष्टुम् अशक्यम्, दुःखपूर्वक देखा जाने योग्य।                                           |
| अभिविज्ञाय     | - | अभि + वि उपसर्ग ज्ञा धातु + क्त्वा > ल्यप्, पहचानकर।                                     |
| विवर्णवदनम्    | - | विवर्ण वदनं यस्य सः तम्, फीकेमुख वाला।                                                   |
| परिजग्राह      | - | परि + ग्रह् + लिट्, प्र० पु० ए० व०, ग्रहण किया।                                          |
| परिष्वज्य      | - | परि + ष्वस्ज् + क्त्वा > ल्यप्, आलिङ्गन करके।                                            |
| आघ्राय         | - | आ + घ्रा + क्त्वा > ल्यप्, सूँघकर।                                                       |
| आरोप्य         | - | आ + रुह् + णिच् + क्त्वा > ल्यप्, बैठाकर।                                                |
| पर्यपृच्छत     | - | परि + पृच्छ् + लङ् (आत्मनेपद, आर्षप्रयोग), पूछा।                                         |
| आत्मसमाः       | - | आत्मना समाः, अपने समान।                                                                  |
| श्रुतवन्तः     | - | श्रुत + मतुप् पु० प्र० पु० ब० व०, शास्त्र पढ़े हुए।                                      |
| जितेन्द्रियाः  | - | जितानि इन्द्रियाणि यैः ते, इन्द्रियों को वश में करने वाले।                               |
| मन्त्रः        | - | मन्त्रणा।                                                                                |
| विजयमूलम्      | - | विजयः मूले यस्य तत्, विजय प्रदान करने वाला।                                              |
| शास्त्रकोविदैः | - | शास्त्रस्य कोविदैः, षष्ठी-तत्पुरुष, शास्त्र के ज्ञाताओं के द्वारा।                       |
| अवबुध्यसे      | - | जागते हो।                                                                                |
| मन्त्रयसे      | - | मन्त्रणा करते हो।                                                                        |
| विनिश्चित्य    | - | वि + निस् + चि + क्त्वा > ल्यप्, निश्चय करके।                                            |
| दीर्घयसि       | - | विलम्ब करते हो।                                                                          |
| अर्थकृच्छ्रेषु | - | अर्थस्य कृच्छ्रेषु, षष्ठी-तत्पुरुष, धन की कठिनाइयों में।                                 |
| निःश्रेयसम्    | - | निःशेषेण श्रेयांसि यस्मिन् तत्, कल्याण।                                                  |
| अमात्यः        | - | मन्त्री।                                                                                 |
| विचक्षणः       | - | निपुण।                                                                                   |
| प्रापयेत्      | - | प्र + आप् + णिच्, विधिलिङ्, प्र० पु० ए० व०, प्राप्त कराए।                                |
| जघन्यः         | - | निंदनीय।                                                                                 |
| एषि            | - | प्राप्त होते हो।                                                                         |
| नियोजयसि       | - | नियुक्त करते हो।                                                                         |
| दक्षः          | - | चतुर, निपुण।                                                                             |
| भक्तवेतनयोः    | - | भोजन और वेतन के।                                                                         |
| उपधातीतान्     | - | उपधायाः अतीतान्, राजाओं के द्वारा किये गये मंत्रियों के परीक्षण से शुद्ध होकर निकले हुए। |
| धृष्टः         | - | किसी के दबाव में न आने वाला।                                                             |

## सन्धिविच्छेदः

|                        |   |                               |
|------------------------|---|-------------------------------|
| रामो दुर्दर्शम्        | = | रामः + दुर्दर्शम्।            |
| युगान्ते               | = | युग + अन्ते।                  |
| कथञ्चिदभिविज्ञाय       | = | कथम् + चित् + अभिविज्ञाय।     |
| रामस्तम्               | = | रामः + तम्।                   |
| पर्यपृच्छत             | = | परि + अपृच्छत (आर्षप्रयोग)।   |
| कश्चिदात्मसमाः         | = | कः + चित् + आत्मसमाः।         |
| कुलीनाश्चेङ्गितज्ञाश्च | = | कुलीनाः + च + इङ्गितज्ञाः + च |
| मन्त्रिधुरैरमात्यैः    | = | मन्त्रिधुरैः + अमात्यैः।      |
| कच्चिन्निद्रावशम्      | = | कत् + चित् + निद्रावशम्।      |
| नैषि                   | = | न + एषि।                      |
| नैकः                   | = | न + एकः।                      |
| ह्यर्थकृच्छ्रेषु       | = | हि + अर्थकृच्छ्रेषु।          |
| कुर्यान्निःश्रेयसम्    | = | कुर्यात् + निःश्रेयसम्।       |
| कच्चिद्धृष्टश्च        | = | कच्चित् + धृष्टः + च।         |
| मतिमाञ्छुचिः           | = | मतिमान् + शुचिः।              |
| कुलीनाश्च              | = | कुलीनाः + च।                  |
| भृत्याश्च              | = | भृत्याः + च।                  |
| कालातिक्रमणाच्चैव      | = | काल + अतिक्रमणात् + च + एव।   |
| भर्तुरप्यतिकुप्यन्ति   | = | भर्तुः + अपि + अतिकुप्यन्ति   |
| सोऽनर्थः               | = | सः + अनर्थः                   |

## अभ्यासः

### 1. संस्कृतेन उत्तरं देयम्

- (क) अयं पाठः कस्माद् ग्रन्थात् सङ्कलितः?
- (ख) जटिलः चीरवसनः भुवि पतितः कः आसीत्?
- (ग) रामः कं पाणिना परिजग्राह?
- (घ) भरतं कः अपृच्छत्?
- (ङ) राज्ञां विजयमूलं किं भवति?
- (च) राज्ञः कृते कीदृशः अमात्यः क्षेमकरः भवेत्?
- (छ) सेनापतिः कीदृग् गुणयुक्तः भवेत्?

- (ज) बलेभ्यः यथाकालम् किं दातव्यम्?  
 (झ) मन्त्रः कीदृशः भवति?  
 (ञ) मेधावी अमात्यः राजानं काम् प्रापयेत्?

## 2. रिक्तस्थानपूर्तिः क्रियताम्

- (क) रामः ददर्श दुर्दर्शं युगान्ते ..... यथा।  
 (ख) अङ्के ..... आरोप्य रामः सादरं पर्यपृच्छत।  
 (ग) कच्चित् काले ..... ?  
 (घ) पण्डितः हि अर्थकृच्छ्रेषु ..... कुर्यात्।  
 (ङ) श्रेष्ठाञ्छ्रेष्ठेषु कच्चित् एवं ..... नियोजयसि।

## 3. सप्रसङ्गं मातृभाषया व्याख्यायेताम्

- (क) मन्त्रो विजयमूलं हि राज्ञां भवति राघव!  
 (ख) कच्चित्ते मन्त्रितो मन्त्रो राष्ट्रं न परिधावति!

## 4. प्रथमनवमश्लोकयोः स्वमातृभाषया अनुवादः क्रियताम्

## 5. अधोलिखितपदानाम् उचितमर्थं कोष्ठकात् चित्वा लिखत

- (क) दुर्दर्शम् = .....  
 (ख) परिष्वज्य = .....  
 (ग) आघ्राय = .....  
 (घ) मूर्ध्नि = .....  
 (ङ) निःश्रेयसम् = .....  
 (च) विचक्षणः = .....  
 (छ) बलस्य = .....

(आलिङ्गन करके), (सूँघकर), (कठिनाई से देखने योग्य), (निपुण),  
 (सेना का), (सिर में), (कल्याण को)

## 6. विपरीतार्थमेलनं क्रियताम्

|           |        |
|-----------|--------|
| एकः       | शनैः   |
| क्षिप्रम् | मूर्खः |
| पण्डितः   | लघु    |
| महत्      | बहवः   |

## 7. सन्धिविच्छेदः क्रियताम्

|               |   |            |
|---------------|---|------------|
| यथा- कुलीनश्च | = | कुलीनः + च |
| भृत्याश्च     | = | .....      |

|            |   |       |
|------------|---|-------|
| धृष्टश्च   | = | ..... |
| अनुरक्तश्च | = | ..... |
| शूरश्च     | = | ..... |

### 8. अधोलिखितेषु शब्देषु प्रकृतिं प्रत्ययं च पृथक् कुरुत

पतितम्, आघ्राय, मन्त्रिणः, पण्डिताः, मेधावी, दातव्यम्, स्मृतः।



#### (क) रामायण-परिचयः

महर्षिवाल्मीकिविरचिते रामायणाख्ये महाकाव्ये अयोध्यानृपतेः दशरथस्य पुत्रस्य रामस्य चरित्रं विस्तरेण वर्णितम्। महाकाव्यमिदं सप्तकाण्डेषु विभक्तम्। यथा -

बालकाण्डम्, अयोध्याकाण्डम्, अरण्यकाण्डम्, किष्किन्धाकाण्डम्, सुन्दरकाण्डम्, युद्धकाण्डम् उत्तरकाण्डञ्चेति।

#### (ख) भावविस्तारः

##### राजा

कार्यं सोऽवेक्ष्य शक्तिं च देशकालौ च तत्त्वतः।

कुरुते धर्मसिद्ध्यर्थं विश्वरूपं पुनः पुनः॥

यस्य प्रसादे पद्मा श्रीविजयश्च पराक्रमे।

मृत्युश्च वसति क्रोधे सर्वतेजोमयो हि सः॥ (मनुस्मृतिः 7/10, 11)

##### मन्त्री

मौलाञ्छास्त्रविदः शूरांल्लब्धलक्षान्कुलोद्भवान्।

सचिवान् सप्त चाष्टौ वा प्रकुर्वीत परीक्षितान्॥ (मनुस्मृतिः 7/54)

##### अमात्यः

अमात्यमुख्यं धर्मज्ञं प्राज्ञं दान्तं कुलोद्गतम्।

स्थापयेदासने तस्मिन्निबन्तः कार्ये क्षणे नृणाम्॥ (मनुस्मृतिः 7/141)

##### वेतनम्

कति दत्तं हि भृत्येभ्यो वेतने पारितोषिकम्।

तत्प्राप्तपत्रं गृह्णीयात् दद्याद्वेतनपत्रकम्॥

सैनिकाः शिक्षिता ये ये तेषु पूर्णा भृतिः स्मृता।

व्यूहाभ्यासे नियुक्ता ये तेष्वर्धाभृतिमावहेत्॥

(शुक्रनीतिः)